में भी उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। इसीलिए वे **अच्युत** कह गये हैं। भक्त के लिए सारथ्य कर्म करने पर भी उनकी सर्वोच्च महिमामयी स्थिति पूर्ववत् अक्षुण्ण बनी रही। इस प्रकार प्रत्येक परिस्थिति में वे पुरुषोत्तम समग्र इन्द्रियों के स्वामी, हृषीकेश हैं। वस्तुतः श्रीभगवान् और उनके सेवक का परस्पर सम्बन्ध अतिशय मधुरिमामय एवं दिव्य है। सेवक अपने सेव्य भगवान् की सेवा में सदा प्रस्तुत रहता है। इसी भाँति, भगवान् भी ऐसे सुयोग के लिए नित्य उत्कण्ठित रहते हैं जब वे भक्त की सेवा कर सकें। स्वयं आज्ञा देने की अपेक्षा अपने शुद्ध भक्त को आज्ञादाता का गौरवमय पद प्रदान कर उससे आज्ञा ग्रहण करने में श्रीभगवान् को विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। ईश्वररूप में वे सबके स्वामी हैं, और उन्हें आज्ञा देने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। पर जब शुद्ध भक्त उन्हें आज्ञा देता है, तो नित्य निरन्तर अच्युत रहने वाले उन प्रभु को चिन्मय आनन्दरस-निर्यास का आस्वादन सुलभ हो जाता है।

शुद्ध भक्त होने के कारण अर्जुन को बन्धु-बान्धवों से युद्ध करना अभीष्ट नहीं था। किन्तु शान्ति-सन्धि न करने विषयक दुर्योधन की हठधर्मी ने उसे युद्धभूमि में उतरने को बाध्य कर दिया। अतएव वह यह जानने के लिए बड़ा उत्सुक है कि वहाँ कौन-कौन महारथी उपस्थित हैं। यद्यपि युद्धभूमि में किसी सन्धि-प्रस्ताव की कोई सम्भावना नहीं है, परन्तु उसे उनका पुनः निरीक्षण करना इष्ट है, यह देखने के लिए कि एक सर्वथा अवाँछनीय युद्ध के लिए वे कितने उद्यत हैं।

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः।।२३।।

योत्स्यमानान्=युद्ध करने वालों को; **अवेक्षे**=देखूँगा; **अहम्**=मैं; **ये**=जो; **एते**= ये सब; **अत्र**=यहाँ; **समागताः**=आए हैं; **धार्तराष्ट्रस्य**=धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन का; **दुर्बुद्धेः**=दुर्बुद्धि; **युद्धे**=युद्ध में; **प्रिय**=मंगल; **चिकीर्षवः**=चाहने वाले।

अनुवाद

तथा दुर्बुद्धि दुर्योधन की प्रसन्नता के लिए युद्ध की इच्छा से यहाँ एकत्रित हुए इन योद्धाओं को मैं देखूँगा।।२३।।

तात्पर्य

यह सर्वविदित है कि दुर्योधन अपने पिता धृतराष्ट्र की सहायता से पापपूर्ण दुरभिसन्धियों के द्वारा पाण्डवों के राज्य का बलापहरण करना चाहता था। उसके सब पक्षपाती भी इसी प्रकृति के सिद्ध होते हैं। युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व अर्जुन उन्हें देखने का इच्छुक है, परन्तु उनसे शान्तिवार्ता की प्रस्तावना करने का उनका कोई अभिप्राय नहीं है। उनका अवलोकन कर वह उनके उस सैन्यबल की गणना करना चाहता है, जिसका उसे सामना करना होगा। अन्यथा, स्वपक्ष में भगवान् श्रीकृष्ण के रहते अपनी विजय के सम्बन्ध में वह पूर्णतया विश्वस्त है।